A-PDF Image To PDF Demo. Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

द्वादश वर्ष] मार्च, १९२७ [तृतीय अङ्क

शिक्षा

वार्षिक मूल्य २) [इस अङ्क का ≈)

सम्पादक
पण्डित सुदर्शनाचार्य्य बी॰ ए॰
सहायक सम्पादक—श्रीनाथसिंह

Single Copy Three Annas

प्लान
9307827326

विषय-सूची

(मार्च सन १९२७)

(१) लाल (पद्य)—[ले०, पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'] १२९

(२) ईसफ—[ले०, श्री० श्रीनाथसिंह] १३१

(३) तारे (पद्य)—[ले०, श्री० राजेश्वर प्रसाद गुरु] १३४

(४) बुढ़िया और बाघ की कहानी—[ले०, पं० रामनरेश त्रिपाठी] १३५

(५) गणित का चमत्कार—[ले०, श्री० कृष्णप्रसाद मेहता] १३८

(६) बंदरिया (पद्य)—[ले०, श्री० गौरीशंकर मिश्र] १४२

(७) चतुर लड़का—[ले०, श्री० शिवनाथ सिंह] ... १४३

(८) हमारी चित्रावली १४८

(९) माँ से बेटों की विनय (पद्य)—[ले०, श्री० रामाधार शुक्ल] १५१

(१०) मन का भेद—[ले०, श्री० शिवनन्दन प्रसाद] ... १५२

(११) बहुला गाय [ले०, श्री० रामनाथ दीक्षित सी० टी०] १५३

(१२) चार डाक्टर ... ... १५[illegible]

(१३) दो बहिनें १५९

(१४) होनहार (पद्य)—[ले०, श्री० सोहनलाल द्विवेदी] १६०

(१५) सुनार की लड़की—[ले०, श्री० गोरधनदास पचीसिया १६२

(१६) बाग का दृश्य (पद्य)—[ले०, श्री० शाहरोशनलाल] १६७

(१७) अनोखी बातें १६९

(१८) चुटकुले १७१

(१९) नई पहेलियाँ १२७

मुद्रक तथा प्रकाशक—पं० सुदर्शनाचार्य्य बी० ए० सुदर्शन प्रेस, प्रयाग।

शिशु

[ईसफ रनिवास में कहानियाँ सुना रहा है]

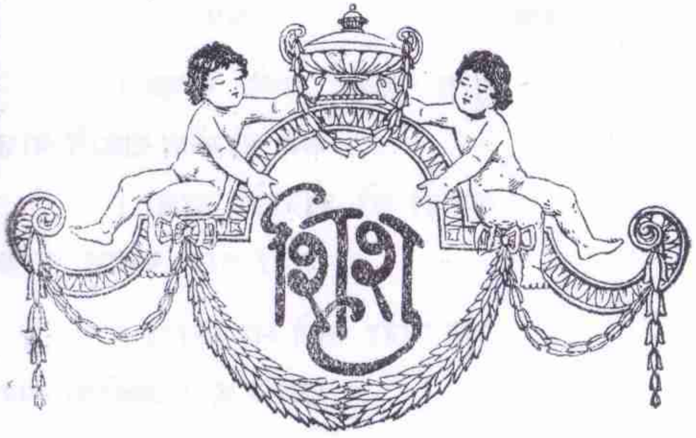

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान। हृदय धरो माता का ध्यान।
तुम हीं पर आशा है सारी। मुख निरखे भारत महतारी॥

१२ वर्ष } प्रयाग, मार्च, १९२७ { ५ अङ्क

लाल

लाल लुनाई का है प्यासा।
पीने वाला दूध बतासा॥
खोल २ मुँह हँसने वाला।
प्यार आँख में बसने वाला॥

गीत अनूठे गाने वाला ।
मन की ढोल बजाने वाला ॥
लकड़ी को दौड़ाने वाला ।
घोड़ा उसे बनाने वाला ॥

धूल भरा सोने सा प्यारा ।
धरती का चमकीला तारा ॥
हरा भरा फूलों सा फूला ।
अपने भोलेपन पर भूला ॥

बहुत निराला सुथरा गोरा ।
दूध का भरा हुआ कटोरा ॥
अँधियाले घर का उजियाला ।
चन्दा मामा का मतवाला ॥

—अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ।

ईसफ

खरगोश और कछुए की दौड़ की कहानी शायद ही कोई ऐसा बालक हो जो न जानता हो । इसी प्रकार शेर और चूहे की, कौवे का मोर पंख लगाने की, लोमड़ी का अङ्गूरों को खट्टा कहने की, एक बीमार आदमी का अपने लड़कों से लकड़ियाँ तुड़वाने की, और बिल्ली का कौवे का गाना सुनने की, आदि सैकड़ों कहानियाँ भी लड़कों ने सुनी होंगी । पर कोई लड़का इन कहानियों के कहने वाले के बारे में कुछ न जानता होगा । इस लेख में हम उसी महापुरुष का हाल लिखेंगे ।

इन कहानियों के लिखने वाले का नाम ईसफ था । ईसफ का जब जन्म हुआ था तब संसार आज कल जैसा न था । तब रेल तार कौन रेलतार क्यों ? रेल तार बनाने वाले अंग्रेज लोग भी न थे । यह उसके भी पहले की बात है जब ईसवी सन शुरू हुआ था ।

ईसफ गुलाम था । पुराने जमाने में जैसे

आज कल बकरे पाले जाते हैं वैसे ही आदमी पाले जाते थे। उन आदमियों को उनके मालिक चाहे बेचते, चाहे मारते, चाहे उन्हे उनके लड़के बच्चों से अलग कर देते, कोई कुछ बोलने वाला न था। ऐसे ही आदमियों में ईसफ भी था। ईसफ देखने में अच्छा नहीं था। उसकी शकल बड़ी बुरी थी। इससे बहुत दिनों तक तो किसी ने उसको खरीदा ही नहीं। ईसफ का मालिक उसे बहुत पीटा करता था कि वह बदशकल क्यों है ? अन्त में एक आदमी ने ईसफ को सस्ते दामों में खरीद लिया।

ईसफ अपने लड़कपन में सोचा करता था कि क्या कोई उपाय नहीं है कि उसे बहुत काम न करना पड़े। अन्त में उसे एक तरकीब मालूम हुई। उसने देखा कि लड़के और स्त्रियां कहानियाँ बहुत पसन्द करते हैं। इसलिये वह मनोरञ्जक पर साथ ही शिक्षाप्रद कहानियां बना २ कर अपने मालिक के स्त्री बच्चों को सुनाने लगा। ईसफ पढ़ा लिखा तो था नहीं बड़ी बड़ी कहानियां वह नहीं बना सकता था। इसलिए उसने

लोमड़ी भेड़िया की, तितली चींटी की, शेर गाय की, कुत्ता और गधे की, छोटी २ कहानियाँ ऐसे ढङ्ग से कहीं कि वे सुनने में बड़ी अच्छी लगीं। अब तो ईसफ का मान बढ़ा और उसकी प्रसंशा सुनकर यूनान के एक बादशाह क्रूसो ने उसे खरीद लिया ईसफ क्रूसो के रनवास में कहानियाँ सुनाने लगा और चैन की बंशी बजाने लगा।

ईसफ का जो चित्र दिया गया है उसमें बालक देख सकते हैं कि वह किस प्रकार क्रूसो की रानियों को कहानियां सुना कर खुश कर रहा है।

अपने इसी गुण के कारण ईसफ आजाद कर दिया गया। इस बात को हुए ढाई हजार बरस हो गए। क्रूसो और उसकी रानियों का नाम निशान तक मिट गया। यूनान की काया पलट होगई। पर ईसफ अपने कहानियों के कारण अब भी अमर है।

—श्रीनाथ सिंह

तारे

(१)

छिटक रहे हैं नभ में तारे ।
कैसे सुन्दर कैसे प्यारे ॥
सोने से ये हैं चमकीले ।
और रंग में भी हैं पीले ।

(२)

दिन को ये सब छिप जाते हैं ।
नहीं किसी को दिखलाते हैं ॥
रात समय में ये सब तारे ।
होते नहीं गगन से न्यारे ॥

(३)

जब बादल घिर कर छाते हैं ।
तब ये नहीं दृष्टि आते हैं ॥
इन्हें देख कर सुख मिलता है ।
फूल सरीखा मन खिलता है ॥

—राजेश्वर प्रसाद गुरु ।

बुढ़िया और बाघ की कहानी

एक जंगल में एक बुढ़िया रहती थी। वह बहुत गरीब थी। वह एक टूटे-फूटे झोंपड़े में रहती थी। बरसात में जब झोंपड़ा चूने लगता। तब वह बेचारी एक एक बूँद से डरती थी।

एक दिन खूब पानी बरसा। बुढ़िया के झोपड़े में पानी ही पानी हो गया। वह बेचारी क्या करे ? एक कोने में बैठ कर वह रोने लगी—मैं बाघ से उतना नहीं डरती सिंह से उतना नहीं डरती, जितना एक बूँद से डरती हूँ।

पानी से भीग कर एक बाघ भी बुढ़िया के झोपड़े के बाहर एक कोने में दबका था। उसने बुढ़िया की बात सुनी। उसने सोचा कि यह मुझसे नहीं डरती, सिंह से नहीं डरती; एक बूँद से डरती है। यह बूँद कौन सा जानवर है जो मुझसे भी ज्यादा बलवान है ?

बाघ यह सोच ही रहा था कि वहाँ एक कुम्हार आया। उसका गधा खो गया था।

अँधेरी रात थी। वह बाघ को न देख सका और उसके पास तक चला आया। इतने में बिजली चमकी। बिजली की चमक में कुम्हार ने बाघ को देखकर समझा कि यह मेरा गधा है। खोजते खोजते हैरान हो गया था। क्रोध में आकर उसने दो तीन डंडे बाघ को लगा दिये और उसके गले में रस्सी बाँध कर वह उसे घर की ओर घसीट ले चला। बाघ ने समझा कि यही बूँद है, जिससे बुढ़िया डरती है। डर के मारे वह घबड़ा गया और कुछ न बोला।

कुम्हार ने बाघ को लाकर घर के बाहर खूँटे से बाँध दिया। और वह घर में आकर सो गया। सबेरा हुआ। कुम्हार ने बाहर आकर देखा तो गधे के बदले बाघ बँधा हुआ है। वह राजा के पास गया और बोला कि मैंने जीता बाघ पकड़ कर बाँध रक्खा है। राजा उसे देखने आये। गाँव के बहुत से लोग भी तमाशा देखने आये। राजा ने बाघ से पूछा—मेरे बड़े बड़े बहादुर सिपाही भी तुम को न पकड़ सके, इस कुम्हार ने तुम्हें कैसे पकड़ लिया ?

बाघ ने कहा—राजा साहब, मैंने समझा कि यह कुम्हार बूँद है।

राजा ने पूछा—बूँद क्या है ?

बाघ ने बुढ़िया की बात कही। राजा ने बुढ़िया को बुला भेजा। बुढ़िया आई। राजा ने उससे पूछा—बूँद क्या है ?

बुढ़िया ने कहा—मैं बहुत गरीबिनी हूँ। बरसात में जब मेरा झोपड़ा चूने लगता है, तब मैं एक एक बूँद से बहुत डरती हूँ।

बुढ़िया और बाघ का हाल सुन कर राजा बहुत हँसे। उन्होंने बुढ़िया के लिये एक पक्का घर बनवा दिया।

कुम्हार को इनाम दिया और एक नया गधा खरीद दिया। और बाघ को पींजड़े में कैद कर दिया।

डरपोक अपनी ही करनी से आफ़त में जा फँसता है।

—रामनरेश त्रिपाठी।

गणित का चमत्कार

आज छुट्टी का दिन था। केशव, सरोज और त्रिभुवन में बड़ी दोस्ती थी। सभों ने आज का दिन अच्छा समझ कर यह निश्चय किया कि आज शाम को त्रिभुवन के घर में मन बहलावेंगे। अस्तु। शाम को केशव और सरोज त्रिभुवन के घर पर उपस्थित हुए। त्रिभुवन ने अपने दोनों मित्रों का अच्छी तरह से स्वागत किया और कहा कि मेरे बड़े भाई साहब ने एक जादू बतलाया है, जिसके द्वारा मैं तुम्हारे मन की बात ठीक २ बतला सकता हूँ।

दोनों को यह बात सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ और कहा कि अच्छा बतलाओ—

त्रिभुवन—अच्छा केशव तुम एक अंक ६० के अन्दर का एक कागज पर लिख लो, परन्तु वह अङ्क ५ से ऊपर का हो।

केशव—(कागज पर ४३ लिख कर) अच्छा लिख लिया।

त्रिभुवन—अच्छा तुम उसको ३, ४ और ५

से भाग दो और जिसका जिसका जो बाकी बचे वह हमें तरतीब वार बतलाओ।

केशव—(थोड़ी देर के बाद) तीन से भाग देने से १ बाकी बचा, चार से भाग देने से ३ बाकी बचा और ५ से भाग देने पर ३ बाकी बचा।

त्रिभुवन—(थोड़ी देर कुछ कागज पर लिख कर) अच्छा, तुमने ४३ का अङ्क लिया था न ?

केशव—(आश्चर्य में होकर) अरे! तुमने कैसे बतला दिया ?

त्रिभुवन—भाई, कहता तो हूँ कि यह जादू का खेल है।

सरोज अब तक चुप बैठा हुआ था। वह दोनों की बात मन लगाकर सुन रहा था। जब उसने देखा कि त्रिभुवन ने सचमुच ही केशव के लिये हुए अङ्क को बतला दिया तो उसने कहा—"अच्छा, अब हम एक अंक लेते हैं, देखें तुम कैसे बतला सकते हो ?

त्रिभुवन—अच्छा, तुम कोई एक संख्या ५ और ६० के अन्दर ले लो और उसको ३, ४

और ५ से तरतीबवार भाग दो और जिसका जिसका जो बचे वह हमें ठीक ठीक बतला दो।

सरोज--(कागज पर ५६ लिख कर थोड़ी देर के बाद) अच्छा, तीन से भाग देने से २ बचा, चार से भाग देने से ३ बचा और पाँच से भाग देने से ४ बाकी बचा।

त्रिभुवन--(थोड़ी देर के बाद) तुमने ५६ लिया है न ?

सरोज--भाई, तुम्हारा तो यह जादू बड़ा ही बढ़िया है। यदि हमें भी इसकी तरकीब बतला दो तो बड़ी कृपा हो।

त्रिभुवन--इस जादू का नियम बहुत ही सरल है अच्छा ३ से भाग देने से जो बचे इसको ४० से गुणा करो, ४ से भाग देने से जो बचे उसको ४५ से गुणा करो और ५ से भाग देने से जो बचे उसको ३६ से गुणा करो। अब इन तीनों गुणनफल को जोड़ कर ६० से भाग दो, जो कुछ बाकी बचे वही लिया हुआ अंक होगा। जैसे केशव ने हमे बतलाया था कि ३, ४

और ५ से भाग देने से क्रमशः १, ३ और ३ बाकी बचे अब उसको इस प्रकार से करना चाहिये—

४० × १ = ४०

४५ × ३ = १३५

३६ × ३ = १०८

४० + १३५ + १०८ = २८३

अब २८३ को ६० से भाग देने से ४३ बचता है, यही तुम्हारा उत्तर होगया।

सरोज—अच्छा, समझ गया—मैं भी अपने मित्रों से पूछूँगा।

त्रिभुवन--मेरे भाई साहब ने एक और ऐसा ही जादू बतलाया है, वह तुम्हें फिर किसी दूसरी छुट्टी को सुनायेंगे।

सात बज चुका था, दोनों मित्र इस नये जादू पर विचार करते हुये घर आये। दोनों ने अपने अपने मित्रों से जादू का हाल कह सुनाया सभी बहुत प्रसन्न हुये।

—कृष्ण प्रसाद मेहता।

बँदरिया

माता ! आज मदारी आया,
अपने साथ बँदरिया लाया।
बँदरी का मुँह कैसा लाल,
चुचके पुचके उसके गाल ॥
पीले पीताम्बर से बाल,
जिनसे ढकी हुई है खाल।
खूब बँदरिया वह नाचेगी,
हम सब का मन बहलावेगी ॥
डमरू डमडम जब बाजेगी,
बँदरी मटक मटक नाचेगी।
अपना मुँह फिर वह धोलेगी,
झट से सिर में कंघी देगी ॥
डण्डा लेकर उठ बैठेगी,
दर्पण में फिर मुख देखेगी।
कुर्सी पर वह बैठ जायगी,
पान, सुपारी, लौंग, खायगी ॥

बना दाँत वह हमें चिढ़ाती,
'हुप हुप' सा कुछ गाना गाती।
बँदरी वह कैसी नटखट है,
रस्ते पर चलती झटझट है।
खेल उसीका करवावेंगे,
माता, हम मन बहलावेंगे ॥

—गौरीशङ्कर मिश्र।

चतुर लड़का

किसी गाँव में एक सेठ रहता था। उसने अपने रहने के लिये एक बड़ा भारी घर बनवाया। थोड़े दिन बाद एक राक्षस उस गाँव में आया और सेठ के परिवार को मार कर खा गया। सेठ भी उससे न बचे। उसकी सेठानी अपने एक लड़के को लेकर अपने बाप के घर चली गई थी इसलिये वह बच गया।

सेठानी ने सेठ का हाल सुन कर अपने बाप के ही घर पर रहना तय किया। छोटा लड़का

भी अपने मामा के घर पर बड़ा होने लगा। एक दिन खेल में सब लड़कों ने सेठ के लड़के को चिढ़ाना शुरू किया। उन्होंने कहा—यह देखो, यह अपनी मामा की रोटी खाकर बड़ी २ बातें करता है। चुप रह, लाज नहीं आती।

लड़का रोता हुआ अपनी माँ के पास जाकर बाप का पता पूँछने लगा। माँ ने कहा—बेटा, तेरा बाप बड़ा धनी था। एक राक्षस आकर तुम्हारे बाप को खा गया और घर का मालिक बन बैठा है। इसलिये जब तक वह इस घर में है तब तक हम लोग वहाँ नहीं जा सकते हैं।

लड़का रसोई बनाने में अपनी माँ को मदद दिया करता था। इसलिये वह रसोई बना सकता था। एक दिन वह राक्षस के पास जा पहुंचा और उससे अपने को रसोई बनाने के लिये नौकर रखने के लिये बिनती की।

राक्षस ने हँस कर कहा—अरे मैं तो तुम्हारा ही कलेवा कर डालूँगा। तुम मेरी रसोई क्या बनाओगे?

लड़के ने हाथ जोड़ कर कहा—भला मेरे जैसे दुबले लड़के से पेट कैसे भरेगा? मेरा खाना न खाना आपके लिये बराबर ही है। इसके बदले अगर आप मुझको भोजन बनाने के लिये रख लें तो मैं आप को तरह २ की चीजें बना कर खिलाया करूँगा।

राक्षस ने सोच समझ कर इस बात को मान लिया। लड़का रोज उसे भोजन बना २ कर खिलाने लगा

राक्षस रोज़ सबेरे बाहर चला जाता था। एक दिन लड़के ने पूछा—आप रोज सबेरे कहाँ जाया करते हैं? राक्षस ने डाट कर कहा—तुझसे क्या मतलब?

लड़के ने कहा—मैं तो इसी लिये पूँछता हूँ कि जिससे तुम्हारे लौटने का ठीक समय जानता रहूँ और गर्म २ खिला सकूँ।

राक्षस ने कहा—अच्छी बात है। मैं धर्मराज के यहां पर पहरा देता हूँ। जिसको जितने दिन जीना है, मरना है, धनी होना है या

गरीब इन सब बातों का हिसाब मेरे मालिक के पास रहता है।

लड़के ने कहा—कृपा करके यह पूँछे आइयेगा कि मैं कितने दिन तक जियूँगा।

राक्षस ने दूसरे दिन लौट कर कहा—मैंने तुम्हारे लिये अपने मालिक से पूँछा है। उन्होंने कहा है कि तुम्हारी उम्र पूरे सौ वर्ष की है।

लड़के ने कहा कि कृपा करके कल यह पूछते आइयेगा कि क्या वे मेरी उमर को कुछ और बढ़ा सकते हैं। राक्षस ने कहा—अच्छा।

दूसरे दिन राक्षस कुछ देर में लौटा। आते ही उसने लड़के से भोजन माँगा। लड़के ने कहा—मेरी बात का जवाब बता दीजिये मैं अभी भोजन लाता हूं।

राक्षस ने कहा—मेरे मालिक ने कहा है कि न तो कोई तुम्हारी उमर कुछ बढ़ा सकता है न घटा सकता है। तुम पूरे पूरे सौ वर्ष जिओगे। अच्छा तो भोजन लाओ।

लड़का तुरन्त ही चौके के भीतर चला गया और लोहे का छड़ गरम कर बाहर निकला।

राक्षस सामने ही बैठा था। लड़के ने उसे देख कर कहा—क्यों रे पाजी। जब मैं पूरे सौ वर्ष जियूँगा तो मैं तुझसे क्यों डरूँ? तू मुझे मार तो सकता नहीं। अभी घर से बाहर निकल। नहीं तो मार डालूगाँ।

इस बात को सुनते ही राक्षस की बुद्धि चकराई और लड़के की बात राक्षस को सच जान पड़ी। गरम लोहे की डर से वह घर से भाग कर न जाने कहाँ चला गया। दो चार दिनों में सब ठीक ठाक कर लड़का अपनी मां को भी लिवा लाया। कुछ दिनों के बाद माँ बेटे फिर धनी हो गये और सुख से दिन बिताने लगे।

—शिवनाथ सिंह।

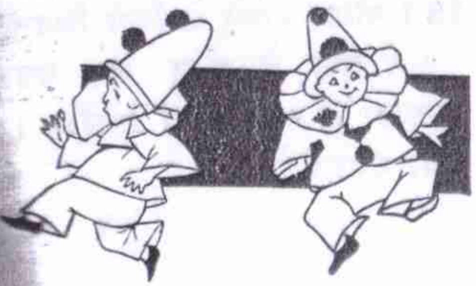

हमारी चित्रावली

देख रहे हैं नभ की ओर।
सुनते हैं चिड़ियों का शोर॥
अगर इधर आ जाए मोर।
तुम का नहीं बचेगा छोर॥
देखो इन्हें लगा कर ध्यान।
सुन लो इनका गुपचुप गान॥

सारी दुनिया घर है अपना।
जगते हैं लखते हैं सपना॥
[प्रे०—श्रीसुमित्रानन्दन पन्त]

यह गुड़िया है भोली भाली।
देती नहीं किसी को गाली॥
टुकुर टुकुर लखती रहती है।
दुख सुख सब सहती रहती है॥

[प्रो० श्रो० बनवारी लाल भार्गव, आगरा]

मा से बेटी की बिनय

मुझको पैसे दे दो अम्मा,
मैं भी पुस्तक लाऊँगी।
भइया के सम कर में लेकर,
मैं भी शाला जाऊँगी॥

लखकर उसके चित्र सभी मैं,
अपना मन बहलाऊँगी।
पढ़ पढ़ उसकी अच्छी बातें,
उन्हें अमल में लाऊँगी॥

उसका किस्सा पढ़ पढ़ अम्मा,
तुझको रोज सुनाऊँगी।
बाबू जी को भी बतला कर,
उनका मन हर्षाऊँगी॥

कविता भी मैं पढ़ कर उसकी
स्वर से प्रति दिन गाऊँगी॥
अन्वय करके शब्दों के भी,
पूरे अर्थ लगाऊँगी॥

कंठ करूँगी प्रभु की विनती,
प्रात समय उठ ध्याऊँगी।
सबकी प्यारी भगनी बन कर
सब को सुख पहुँचाऊँगी॥

—रामाधार शुक्ल।

मन का भेद

प्यारे शिशुओ! तुमने योरुप का नाम सुना होगा। इसके दक्खिन में ग्रीस नाम का एक देश है। यहाँ सिकन्दर नाम का एक राजा राज्य करता था। एक बार इसने अपने मन का एक गुप्त भेद किसी मित्र से कह दिया। और कहा—"किसी दूसरे से न कहना।" उस मनुष्य ने उस भेद को बहुत दिनों तक तो किसी तरह छिपा रक्खा। पर अन्त में कभी उसने वह भेद अपने एक मित्र से कह दिया। होते २ यह खबर बादशाह तक पहुँची।

बादशाह यह सुन कर अपने मित्र पर बहुत

नाराज हुआ। किसी बुद्धिमान् से पूछा कि उस मनुष्य को क्या दंड होना चाहिये?

बुद्धिमान् बोला—"सुनो बादशाह! तुम यह जानते थे कि यह भेद गुप्त रखने योग्य है और तुम्हीं उसको गुप्त न रख सके, तो उसका अपराध क्या है। मैं उसे दण्ड देने की सम्मति नहीं दे सकता।" बादशाह यह सुन कर लज्जित हुआ, और अपनी भूल समझ कर चुप रह गया।

—शिव नन्दन प्रसाद।

बहुला गाय

किसी समय भारत वर्ष के एक नगर में एक किसान रहता था। उसके पास एक बड़ी सुन्दर गाय थी जिसका नाम बहुला था। वह नगर की और गायों के साथ नित्य बन में चरने जाया करती थी। उसी बन के निकट पहाड़ों की कन्दराओं में एक बड़ा भयानक और बलवान सिंह रहता था। उस

सिंह के भय से कोई गाय उधर नहीं जाने पाती थी। एक दिन बहुला अपने नवजात बछड़े को घर पर छोड़ कर नित्य की भांति चरने गई। दैवयोग से वह चरते चरते पहाड़ों की कन्दाराओं के निकट जा पहुँची। उसको देखते ही सिंह झपट कर उसके पास आया और खाने के लिये उद्यत होगया। सिंह को देख कर बहुला सहम गई और बोली,—"हे मृगों के राजा कृपा करके आप मुझको छोड़ दें। मेरा नन्हा सा बछड़ा मेरी बाट देखता होगा। मैं उसको दूध पिलाकर और समझा बुझा कर कल तड़के आपके पास आजाऊँगी। तब आप जो चाहें सो करना।" गाय की इन बातों को सुन कर सिंह खिल खिला कर हँस पड़ा और कहने लगा,—"तुम मुझे माफ़ करो, मैं तुमको छोड़ कर बेवकूफी नहीं करूँगा। यदि आज मैं तुमको जाने दूँ तो तुम्हारा आना तो दूर रहा, कल यहाँ तुम्हारी परछाईं तक न दिखायेगी।"

परन्तु जब गाय ने दूसरे दिन लौट आने के लिये बहुत सी सौगंधें खाईं तो सिंह ने उसको

घर जाने की आज्ञा दे दी। घर आकर बहुला ने अपने बच्चे को दूध पिलाया और प्रेम से उसको चूमा चाटा। दूसरे दिन वह सिंह के पास जाने को तैयार हो गई, परन्तु जाने के पहले वह अपनी सखी सहेलियों से मिलने गई और उनको सम्पूर्ण कथा कह सुनाई। यह सुनकर उसकी सहेलियों ने कहा, "व्यर्थ में मरना कौन सी बुद्धिमानी है? अपनी जान बचाने के लिये सौगन्द करना तो संसार का नियम है। फिर अभी तुम्हारा बच्चा बहुत छोटा है, वह तुम्हारे बिना तड़प तड़प कर मर जायगा।"

उनकी ये बातें सुनकर बहुला ने कहा—"नहीं बहनो, तुम मुझे इस प्रकार की शिक्षा न दो। यह जीवन कितने दिनों का है जिसके लिये मैं अपने प्रण से टल जाऊँ। माना, कि अभी यदि मैं सिंह के पास न जाऊँ तो मैं जीवित रह जाऊँगी। परन्तु कुछ दिनों के बाद मरना अवश्य ही पड़ेगा। क्योंकि संसार में जो जन्म लेता है वह मरता अवश्य ही है। जब मर कर मैं परमात्मा के सामने जाऊँगी तो उसके

सामने मुँह कैसे करूँगी ?" यह सब बातें कह कर वह अपनी सहेलियों को अन्तिम प्रणाम करके सिंह के पास चल दी और थोड़े ही समय पर्यन्त उसके पास जा पहुँची। बहुला को देख कर सिंह के आश्चर्य का बारा पार न रहा क्योंकि वह तो सोचे बैठा था कि वह अब उसके पास नहीं आवेगी। परन्तु जब बहुला जाकर उसके सम्मुख खड़ी हो गई तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ और उठकर बहुला के चरणों पर गिर पड़ा और कहा,—"हे माता ! मैं अधर्मी नहीं हूँ जो तुम्हारी सरीखी गौवों का बध करूँ। जाओ, और जाकर अपनी सहेलियों तथा अपने छोटे बच्चे को प्रसन्न करो" बहुला प्रसन्न होकर वहाँ से चल दी और बहुत दिनों तक सुख पूर्वक रहती रही।

—राम नाथ दीक्षित सी० टी०।

——

चार डाक्टर

वैसे तो लड़कों के बहुत से डाक्टर हैं पर आज हम केवल चार का हाल बतलावेंगे। उन चार में एक हैं डाक्टर 'खड़ासिंह'। खड़ासिंह का कहना है कि अगर तुम बहुत देर तक खड़े

डा० खड़ा सिंह। डा० नाक साँस

रहो तो मजबूत होजाओगे। दूसरे हैं डाक्टर 'नाक साँस'। नाक साँस का कहना है कि तुम चाहे खड़े रहो चाहे बैठो पर साँस हमेशा नाक से लो। जो नाक से साँस लेता है वह कभी

बीमार नहीं पड़ता। तीसरे हैं डाक्टर 'स्नान-चन्द' स्नानचन्द का कहना है कि रोज ठंडे पानी में गोता मार कर नहाओ इससे तुम्हारे बदन में फुर्ती आएगी। चौथे हैं डाक्टर 'चबाकर'

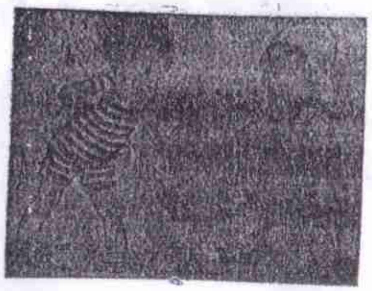

डा०स्नान चन्द   डा० चबा कर

चबाकर का कहना है कि तुम जो भी खाओ उसे खूब चबा कर खाओ। इससे खाना अच्छी तरह हजम होता है।

इसी तरह और भी बहुत से डाक्टर हैं। जिनका हाल आगे फिर लिखेंगे।

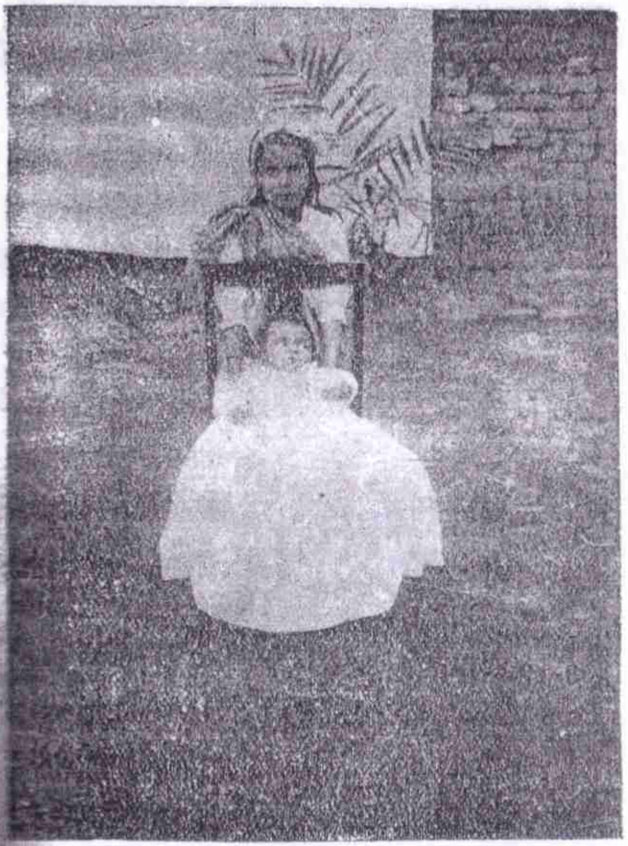

दो बहिनें

प्रे०—सरलादेवी सकसेना, इटावा।

होनहार

व्यर्थ जो समय न खोते हैं।
बात के पक्के होते हैं॥
झूठ का बीज न बोते हैं।
प्रेम के बहते सोते हैं॥
काम कर समय बिताते हैं।
वही कुछ कर दिखलाते हैं॥

बुरों से जो रहते हैं दूर।
भलाई से रहते भरपूर॥
मानते अपना किया कसूर।
सत्य को कभी न करते चूर॥
बात कर उसे निभाते हैं।
वही कुछ कर दिखलाते हैं॥

न जो नित खेला करते हैं।
ध्यान पढ़ने में धरते हैं॥
दुःख दुखियों का हरते हैं।
सदा पापों से डरते हैं॥
न बढ़ बढ़ बात बनाते हैं।
वही कुछ कर दिखलाते हैं॥

बड़ों का जो करते हैं मान।
न छोटों का करते अपमान॥
सादगी ही है जिनकी शान।
सदा करते ईश्वर गुण गान॥
गुणों को जो अपनाते हैं।
वही कुछ कर दिखलाते हैं॥

दूसरों का न बुरा तकते।
न जो पागल से हैं बकते॥
काम पर जल्द न जो थकते।
भला औरों का कर सकते॥
नम्र बन चित्त चुराते हैं।
वही कुछ कर दिखलाते हैं॥

—सोहनलाल द्विवेदी।

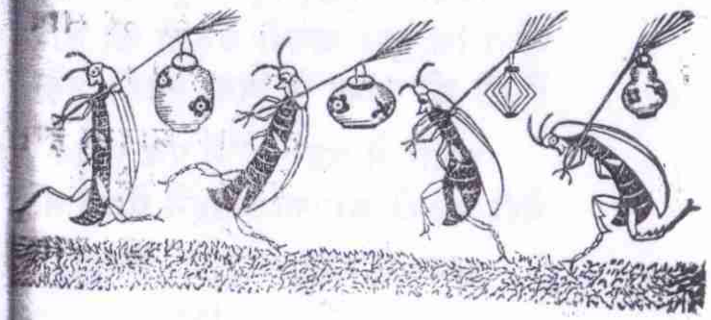

सुनार की लड़की

एक राजा के दो रानियाँ थीं। राजा ने अपनी रानियों को यह हुक्म दिया कि तुम हमेशा अपने हाथ से कपड़ा सीकर पहना करो। एक दिन एक सुनार की लड़की राजा के घर छाछ लेने के लिये आई। लड़की ने रानियों से कहा—"अगर मेरे ऐसा पति होता तो मैं उसको अपना पैर धोकर पिलाती।" इतने में राजा साहब बाहर से आये और सब बातें ध्यान पूर्वक सुनी। राजा ने अपने मन में यह प्रण कर लिया कि मैं इस सुनार की लड़की को ब्याहे बिना रोटी न खाऊँगा।

राजा ने दूसरे दिन सुनार को यह कहला भेजा कि तुम्हें अपनी लड़की की शादी मेरे साथ किसी की आज्ञा के बिना करनी पड़ेगी।

सुनार ने कहा—"मैं एक गरीब आदमी हूँ। मेरी लड़की आपको ब्याहने योग्य नहीं है।"

राजा ने कहा—"तुम अच्छी तरह ब्याह

दो, नहीं तो तुम्हारी लड़की को छीन लिया जायगा।"

सुनार ने अपनी लड़की राजा को ब्याह दी। राजा ने सुनार की लड़की को घर ले जाकर कहा—"यह मेरी तलवार है। अगर तुम्हारा वचन पूरा नहीं हुआ तो कत्ल कर दूँगा।"

लड़की ने कहा—"क्या तुम आसमान की परी को ले आये हो। मैं तो एक गरीब सुनार की लड़की हूँ।"

राजा ने कहा—"वह आसमान की परी किस देश में है, मैं उसको अवश्य लाऊँगा।"

सुनार की लड़की ने कहा—"आगरे में एक सुशीला नाम की राज कन्या बड़ी सुन्दर है। राजकन्या के पास जो कोई जावे उससे वह २० प्रश्न पूछती है। अगर कोई बीसों प्रश्न बतावे तो वह अपना ब्याह उसके साथ कर ले, अगर नहीं बताया जाय तो उसको कैद कर दे।"

राजा साहब उसी वक्त घोड़े पर चढ़कर रवाना हुए। राजा साहब उस राजकन्या के

पास पहुँचे और प्रश्न के उत्तर देने के लिए तैयार हुए। मगर उत्तर गलत निकला और राजा जो कैद में बैठा दिये गये।

सुनार की लड़की ने देखा कि राजा वहाँ पर फँस गये। तब वह भी आगरे की तरफ रवाना हुई। सुनार की लड़की ने मर्दाना भेष करके २० प्रश्नों का उत्तर अच्छी तरह से दे दिया। तब राजकन्या ने कहा—"तुम मेरे साथ ब्याह करो। सुनार की लड़की ने अपने खाँड़े (कटार) साथ के ब्याह कर लिया और उस घमंडी राजा को साथ लेकर अपने नगर की तरफ रवाना हुई।

फौज एक नगर में ठहरी और लड़की ने हुक्म दिया कि सब सज्जनों के वास्ते खूब बड़े बना कर सब को खिलाया जावे।

सब फौज को अच्छी तरह से बड़ा खिलाया गया। तब सुनार की लड़की ने कहा—"रात्रि को मेरे मकान पर उस घमंडी राजा को सोने के लिए भेज दिया जावे।"

सुनार की लड़की ने सोते वक्त अपना पैर धोकर अपने पलंग के नीचे एक कटोरे में पानी रखा, और फौज को यह सख्त हुक्म दे दिया कि रात्रि के समय यह घमंडी राजा बाहर न निकलने पावे। उस घमंडी राजा ने दिन के समय बहुत बड़ा खाया था इसलिए रात के समय उसको बहुत प्यास लगी। फौज को कहा कि मुझे बाहर ले जाकर के पानी पिला दिया जावे। फौज ने कहा कि बाहर निकालने का हुक्म नहीं है। इतने में सुनार की लड़की उठी और पूछा—"क्या मामला है।"

राजा ने कहा—"मुझे बहुत प्यास लगी है इसलिए मैं उस कटोरे में जो पानी रखा है उसको पीना चाहता हूँ।"

सुनार की लड़की ने कहा—"यह पानी मेरा पैर धोया हुआ है।"

राजा ने कहा—"हुजूर मैं इसको भी पी लूँगा।" इतने में उसने यह पानी पी लिया।

सूर्य निकलने के थोड़ी देर बाद सुनार की

लड़की ने उस घमंडी राजा को कहा—"तुम इस सेना के मालिक हो। इतना कह कर वह अपने गाँव की तरफ चली गई। इसके बाद वह राजा अपनी फौज सहित बड़ी धूम धाम के साथ अपने देश में पहुँचा और पहुँचते ही उस सुनार की लड़की के पास गया। और कहा—"मैं आसमान की परी को ले आया हूँ। तू अपना वचन पूरा कर।" तब सुनार की लड़की ने कहा—"उस मैदान में क्या तुमने मेरा पैर धोया हुआ पानी नहीं पिया। इतना सुनते ही राजा लज्जा के मारे मुँह नीचा करके महल से बाहर चला गया।

बालको घमण्ड करने का यही फल होता है।

—गोरधनदास पचीसिया।

बाग का दृश्य

(१)

दृश्य देखकर बाग तुम्हारा।
हुआ प्रफुल्लित हृदय हमारा॥
वृक्षों की है छटा निराली।
मन को हरती है हरियाली—

(२)

सींच रहा उनको बन माली।
चिड़ियाँ बैठीं डाली डाली॥
फूलों के हैं रंग निराले।
चित को हैं ये हरने वाले॥

(३)

ठंडे ठंडे झोंके आते।
फूल टूटते गिरते जाते॥
कुछ की तो पंखड़ी झड़ी हैं।
कलियाँ लख यह सोच रहीं हैं॥

(४)

है जो आज दशा सुमनों की।
शीघ्र वही होगी कलियों की॥
दुखित हृदय को वे करती हैं।
जो मुरझा कर गिर पड़ती हैं॥

(५)

दुखी हमी हैं—सोच रहा था।
विधि को योंहीं कोस रहा था॥
पर मुरझाती कलियाँ कहतीं।
सुनो! आफ़तें सब पर पड़तीं॥

—शाह रोशन लाल।

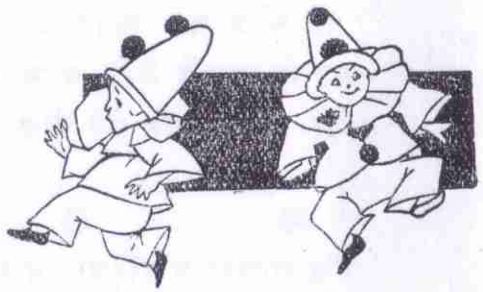

अनोखी बातें

ऊँट बोझा लेकर दिन भर में पचीस मील चल सकता है। पर यदि खाली पीठ हो तो दिन में साठ सत्तर मील चला जायगा।

❀ ❀ ❀

कौआ एक वर्ष में ७०००००० कीड़े खा जाता है।

❀ ❀ ❀

कछुआ एक दफे में डेढ़ सौ तक अण्डे देता है।

❀ ❀ ❀

एक अँग्रेज यात्री ने टारेटरी देश में एक ऐसा पेड़ देखा है जिसके फलों का गुच्छा भेड़ बकरी की तरह दिखाई देता है।

❀ ❀ ❀

रोम में सेंट पीटर्स का गिरजा घर है। यह २०५ गज लंबा है इसका क्षेत्रफल १८००० वर्ग

गज है। और इसका गुम्बद गोलाई में १३८ फीट है।

❀ ❀ ❀

लंदन का सेंट पाल गिरजा घर इसका आधा लंबा है और मजे में इसके भीतर अँट सकता है।

❀ ❀ ❀

सन् १९१४ ई० में एक अच्छा जंगी जहाज बनाने में करीब ७५००००० रु० खर्च लगता था, अब उसी तरह के जहाज बनाने में ३९५००००० रु० खर्च पड़ेंगे।

❀ ❀ ❀

कुछ लोगों का ख्याल है कि दिन की बनिस्बत बिल्लियें रात के अन्धकार में अच्छा देख सकती हैं, पर यह बात नहीं है। उनको दिन और रात को समान दिखाई देता है। हाँ यह बात है कि रात के वक्त वे आदमियों या दूसरे जानवरों से अच्छा देख सकती हैं।

चुटकुले

एक बार एक मियाँ जी की कोई चीज खो गई, उन्होंने दिल में कहा—"या खुदा! अगर तू मेरी खोई हुई चीज बख्स दे तो मैं तुझे कुछ प्रसाद चढ़ाऊँ।" संयोगवश उनकी चीज मिल गई। वे अपने कथनानुसार बाजार से प्रसाद लाने चले। जब प्रसाद लेकर लौट रहे थे कि राह में एक चील ने झपट्टा मार कर सब प्रसाद छीन लिया। वे दुख से कातर हो बोले—लाहौलवलाकूवत! खुदा का अदना बन्दा होकर खुदा की चीज़ पर झपट्टा मारता है। कहीं खुदा के कहर से तू भी मेरी चीज की तरह खो न जा और तेरे अब्बाजान तेरे पीछे प्रसाद डालियाँ देते फिरें।

❀ ❀ ❀

एक मदारी बँदरिया नचा रहा था। मियाँ अनाड़ी उस रास्ते से गुजरे और मदारी को देख

कर बोले—"ऐ मियाँ मदारी। तुम्हारी बँदरिया तो ऐसी नाचती है जैसी मेरी दुलहन।"

❀ ❀ ❀

एक बार एक आदमी ने एक खून कर दिया। उसे फाँसी की आज्ञा मिली। फाँसी का जब समय आया तब न्यायाधीश ने पूछा—"क्या चाहते हो ?"

खूनी—"हुजूर देंगे, मुझे विश्वास तो नहीं होता ?"

न्यायाधीश—"हाँ माँग सकते हो। एक घन्टे का समय दिया जाता है, फिर कुछ नहीं मिलेगा।"

खूनी—मेरी जिन्दगी बख्स दें, बस और मुझे किसी चीज की चाह नहीं।"

❀ ❀ ❀

मैजिस्ट्रेट—'ओ बे थीफ। (चोर) तुझको एक बड़स की कड़ी सजा दी जाती है।"

चोर—'हुजूर! इस सजा के आधे हकदार एक साहब और हैं।"

मैजिस्ट्रेट—"वह कौन है और कैसे है ?

चोर—"हुजूर! वह वकील साहब हैं। मैंने चोरी का आधा माल उन्हें इनायत किया और उन्होंने ले भी लिया है।"

❀ ❀ ❀

एक अफीमी पिनक में अपने दोस्त के घर की राह भूल गए। वे एक दूसरे के मकान पर जा पुकारने लगे—"अबे ओ मियां याकूत! मैं फाटक पर खड़ा हूँ, पैर काँप रहें हैं, किवाड़ खोलना।" घर वाला नहीं था। घरवाली बोली—"ओ! ठण्डे २ जाओ, यहाँ मियाँ याकूत नहीं रहते।" अफीमची ने समझा कि मियाँ याकूत ही बोल रहे हैं। वह बोला—"क्यों बेपर की लेते हो हँसी मजाक का तोबड़ा चढ़ा लिया है क्या ?"

बीबी बोलीं—"जाता है या बेधा जायगा। मैं मियाँ याकूत नहीं मियाँ चिलमबाज की दुलहिन हूं। चिलमबाज को आवाज़ करूँ क्या ?"

अफीमची बोले—"बीबी! मुझे इतंमीनान नहीं होता, खैर मैं जाता हूँ। मैं यह नहीं

जानता था कि मियाँ याकूत मियाँ चिलमबाज की दुलहन भी हैं।"

❀ ❀ ❀

एक अमीर आदमी के बाग में एक चोर पैठा। माली कहीं किसी जरूरी काम से चला गया था। चोर जाकर पके २ फल तोड़ने लगा। इतने ही में माली की स्त्री आगई और उसने जब उस नए आदमी को देखा तो आश्चर्य्य से बोली—"कौन है रे ?"

चोर ने जबाब दिया—"मैं नया माली हूँ, मुझे बाबू साहब ने नियुक्त किया है, क्योंकि उसने एक बार चोरी की थी। इस दरबार में महफिल लगी है और लाल साहब ने मुझे केले, नाशपाती, अँगूर और आम वगैरह लाने के लिये भेजा है। इसी से तोड़ रहा हूँ।"

मालिन यह सुन कर दुख से अपना सा मुँह लेकर घर लौट गई और चोर खूब फल तोड़ कर चम्पत हुआ।

—कुमारी सुशीलादेवी।

नई पहेलियाँ

(१)

बहुत बड़ा यह गोला है।
रत्न एक अनमोला है॥
चमक बहुत ही प्यारी है।
आँखों को दुखकारी है॥

(सूर्य्य)

(२)

सिर पर चढ़ा सदा दिन रात।
बूझो तो यह कैसी बात॥
रहता कर सब एका साथ।
नहीं पैर सिर या है हाथ॥

(बाल)

(३)

लड़के का यह पहरेदार।
कहता सबको खाट बिसार॥

(मुर्गी)

(४)

वर्षा में जब जल गिरे,
गर्मी में जब घाम।
तब यह आता काम है,
देता है आराम॥

(छाता)

(५)

"दो अक्षर का नाम हमारा।
कर्म बुरा अति, हमको प्यारा॥
सोचो समझो इसे बताओ।
उलट पढ़ो तो अर्थ—"बनाओ॥"

(चोर)

—कुमारी सुशीलादेवी।

———

खुशखबरी

आनन्द समाचार! आनन्द समाचार!!

जो चाहिये—

विनोद कंपनी

५०४, कर्नलगंज इलाहाबाद

से मँगाइये

यह लीजिये, अब आपको अपने मनोविनोद तथा शिक्षा सम्बन्धी सामान के लिये कहीं भटकना नहीं पड़ेगा। ऊपर लिखे पते पर पत्र लिख कर जो चाहिए घर बैठे मँगा लीजिये। आपके मतलब की सब तरह की चीज़ें हमारे यहाँ मिल सकती हैं।

स्टेशनरी की चीज़ें जैसे—कलम, दावात, पेन्सिल, चाकू, कापी, ड्राइङ्ग का सब तरह का सामान हमारे यहाँ सब मेल का मिल सकता है। खेल में शिक्षा देने के भी भाँति भाँति के सामान हमारे यहाँ मिलते हैं।

तरह तरह के खिलौने जिनको पाकर बच्चे बहुत ही प्रसन्न होते हैं--हमारे यहाँ हमेशा मौजूद रहते हैं।

बड़ी सुन्दर सुन्दर गुड़ियाँ तथा गुड़ियों के बरतन आप हमारे यहां से मँगा सकते हैं। संक्षेप में इतना ही लिख देना काफी होगा कि बालक और बालिकाओं के मतलब की सब चीजें हमारे यहाँ मिलती हैं।

जो वस्तु जिस कीमत की आपको जरूरत हो लिख भेजें किफायत के साथ डाक द्वारा आपको घर बैठे मिल जायँगी। न आपको बाजार में तलाश करने की जरूरत पड़ेगी न मोल भाव करने का कष्ट। आप लोगों को किफायत के साथ अच्छी अच्छी चीजें घर बैठे मिल सकें इसीलिये यह कम्पनी खोली गई है।

हमारे यहाँ जितनी तरह के खिलौने आते रहते हैं उन सब के चित्र और कीमत लिखनी कठिन है। इसके दो कारण हैं कि जर्मनी तथा जापान आदि से नित्य नये नये ढंग की चीजें आती रहती हैं दूसरे कीमत में भी हेर फेर होता रहता है। तो भी ग्राहकों की जानकारी के लिए वर्त्तमान समय की कीमत और थोड़े से चित्र दिये गये हैं।

सिलूलाइड के बच्चे

यह बच्चे बड़े सुन्दर है। इनके हाथ पाँव चाहे जिधर को मोड़ लीजिये। चाहे बैठाल दीजिये या खड़ा कर दीजिये। अपने मन के कपड़े पहनाइये सजाइये और मन बहलाइये।

जर्मनी के बने हुए सिलूलाइडके बच्चे

लम्बाई ३ इंच से २८ इंच तक। कीमत आठ आने से १०) रुपये तक।

वही जापान के बने हुए

३ इँच से २८ इंच तक। चार आने से २०) रुपये तक।

शिक्षाप्रद कीमती खिलौने

रेल का एंजन

यह रेल का अंजन ठीक रैल के अंजनका नमूना है। इसमें सब कल पुरजे सचमुच के अंजन की भांति ही हैं और आग पानी से चलता है। इस खिलौने के खेलने से बालकों को असली अंजन की बनावट तथा कल पुरजों का ज्ञान होजाता है। यह भाफ से चलता है, सीटी भी बजाता है, सभी बातों में सच्चे अंजन का मुकाबिला करता है। इसके साथ इसके इस्तेमाल करने की तरकीब भी छपी हुई मौजूद है। बहुत सुन्दर मजबूत बक्स जिसमें यह रखा जाता है इसके साथ मिलता है। कीमत १५) रु० से ६०) रु० तक

स्टीमर जहाज़

यह जहाज भी सचमुच के स्टीमर जहाज़ का नमूना है। जहाज़ के कल पुरजे सभी इसमें मौजूद हैं और काम करते हैं। यह भी भाफ से चलता है। कीमत १५ रु० से २५ रु० तक।

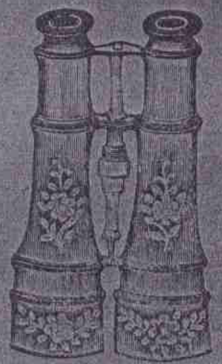

दूरबीन

यह दूरबीन नये फैशन की अभी हाल में आई है। आँखों के सामने लाइये और मीलों की चीज पास देखिये कीमत १) से ५) रुपया तक।

बायस्कोप

एकबार थोड़े से रुपये खर्च कर घर में रोज बायस्कोप का तमाशा देखना हो तो एक बायस्कोप मंगा लीजिये कीमत ७) ८) ६) १२) २०)

मेकानो

(खेल में इंजीनियरी की शिक्षा)

यदि आप को अपने बच्चों को खेल २ में कारीगरी तथा इंजीनियरी की शिक्षा देनी है तो इस मेकानो बक्स को मँगा कर उनको दीजिये

बच्चों की बुद्धि के विकास का यह अपूर्व साधन है। इस बक्स में लोहे और पीतल के तरह २ के टुकड़े हैं और उनको जोड़ने के लिये भांति २ के पेच, पहिये, पेचकस आदि सामान भी हैं। जिनको जोड़ने से केन, पुल, मीनार हवाई जहाज़

... के डिब्बे, सिगनल, झूला आदि अनेकों अद्भुत २ चीज़ें ... अपने हाथों तयार कर सकते हैं। इसमें सबसे अच्छी बात यह है कि बालकों को किसी उस्ताद से सीखने जरूरत नहीं है ... किसीसे पूछने की। यह ऐसे सुगम रीति से तयार किया ... है कि बालक आप से आप खेल ही खेल में सब ... बनानी सीख लेते हैं। इसके साथ में भांति २ की चीज़ें

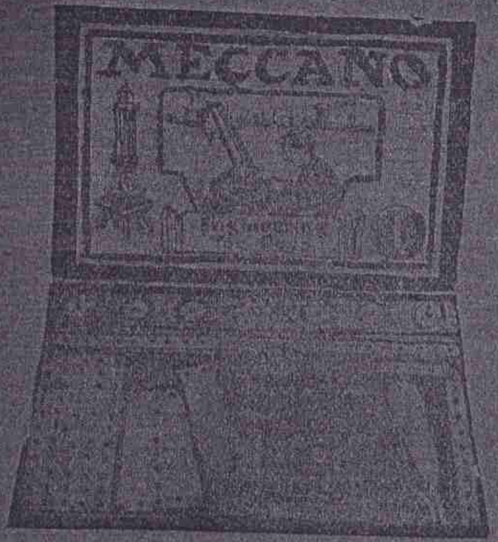

बनाने के कायदे भी छपे हुये रक्खे रहते हैं जिसमें नमूने की भांति बहुत से चित्र भी दिये हैं। जिनको देख कर बालक अपने आप सब चीजें तयार करते हैं। यह ऐसा मनोरंजक खिलौना है कि इसको पाकर बालक बहुत ही प्रसन्न रहते हैं।

मिकानो नं०	००	मूल्य	४॥)
,, नं०	०	"	५॥)
,, नं०	१	"	=॥)
,, नं०	२	"	१५)
,, नं०	३	"	२५)

इमारत बनाने लिए काठ के टुकड़ो के वक्स

इन वक्सों में काठ के सब तरह के टुकड़े हैं । इन टुकड़ों को नीचे ऊपर रखकर बालक भाँति २ के मकान बना लेते हैं और अपने साथियों को अपनी कारीगरी दिखाकर बड़े प्रसन्न होते हैं इन वक्सों के साथ मकानों के बहुत से नक्शे भी रहते हैं जिनको देख कर मकान बनाये जाते हैं चतुर बालक और भी अनेक प्रकार की इमारतें बना कर अपनी चतुरता प्रगट करते हैं ।

यह वक्स कई मेल के हैं जितने ही अधिक दामों के हैं उनमें उतने ही अधिक तरह २ के टुकड़े हैं जिनसे और भी ज्यादा अधिक प्रकार के मकान और इमारतें तयार की जा सकती है । दाम ॥) से लेकर ४) रुपये तक हैं । चाहे जिस कीमत का मगाइये ।

चित्र चौकोना

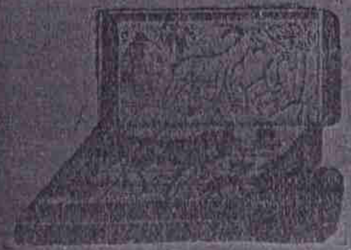

यह भी एक तरह का वक्स है इसमें बहुत बढ़िया बहुत से चौकने चित्रित काठ के टुकड़े होते हैं जिनको मिलाने से कई प्रकार के चित्र बन जाते हैं छोटे बालकों की बुद्धि को विकसित करने तथा मन बहलाने के लिये यह भी अपूर्व खिलौना है इसके साथ अलग चित्र रक्खे हैं जिनको देख कर चौकोने टुकड़ों से चित्र तयार किये जाते हैं मूल्य १।) रुपये से ५) रुपये तक

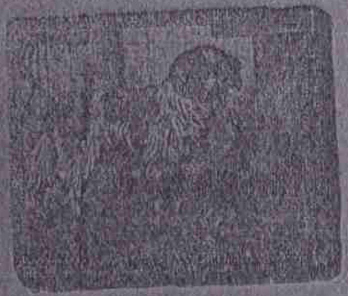

चाभीदार खिलौने

चाभीदार अनेक तरह के खिलोने हमारे यहाँ है सब के चित्र और दाम इस छोटे से विज्ञापन में देने असम्भव है तथापि ग्राहकों की जानकारी के लिए थोड़े से यहाँ पर दिये जाते हैं ।

चलने वाला मोर

यह बड़ा ही सुन्दर मोर चाभी लगाने से बड़ी शानदार चाल से सचमुच के मोर की तरह चलने लगता है कीमत ४।) सवा चार रुपये ।

पटरीदार रेल

यह रेल पटरी दार है। पटरियों को जोड़कर एक बड़ा सा पटरियों का घेरा बनजाता है उस पर रेल दौड़ती है चाभी लगाने से बड़ी देर तक आप से आप दौड़ती रहती हैं दाम ३) से ८) रुपये तक

मोटर कार

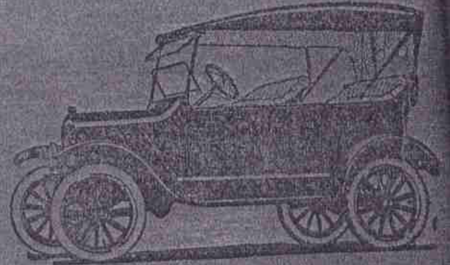

चाभी देते ही चल देती है। इसमें छोटी गुड़ियाँ बैठाई जा सकती है। कीमत १।) रु० से ४) रु० तक

चढ़न्ता बन्दर

यह बन्दर डोरी पर स्वयम चढ़ता उतरता है। देखनेवालों को ताज्जुब होता है। दाम १।)

बाइसिकल

बाइसिकल पर सवार बैठा हुआ है और बड़ी तेज़ी से साइकिल चलाता है। दाम २)

मोटर साइकिल

मोटर साइकिल को सवार चाभी देते ही चलाने लगता है। कीमत १।)

पींजरे की चिड़िया

बड़े खूब सूरत पींजरे में यह चिड़िया बन्द है चाभी देते ही पंख फड़ फड़ाने और मधुर स्वर में बोलने लगती है देखनेवाले अचम्भे में आजाते दाम ३) रु०

रेलगाड़ी

यह चाभी दार रेलगाड़ियां बड़ी ही सुन्दर और बच्चों के मन बहलाने वाली हैं यह कई तरह की हैं जिनकी कीमत १॥) रु० से २॥) तक

चलता फिरता मगर

यह मगर जब चाभी लगाने से चलता है तो मुंह और पूंछ भी चलाता है। की० १।)

पेचदार जहाज़

चाभी देते ही जहाज़ रवाना होजाता है दाम २)

धिन्नक धिन्ना

यह चाभीदार खिलौना भी अपने ढंग का एक ही है। एक काले साहेब बहादुर एक चौकी पर बड़ी अकड़ से खड़े हैं चाभी देते ही आप का नाच शुरु होजाता है और बड़ी शान से बड़ी देर तक नाचते हैं साहेब बहादुर के जूते बड़ी ताल के साथ पड़ते हैं। मूल्य २।) रुपये।

वासुदेव प्याला

इसमें जल भरिये जल एक बूंद न गिरेगा परन्तु जल जब इतना भर जा कि श्री कृष्णचन्द्र के चरण तक पहुंच जाय तब जल आपसे आप निकल जाता है। इस प्याले को बनाकर कारीगर ने भागवत का वह दृश्य प्रत्यक्ष कर दिखाया है जब श्री वसुदेव जी श्रीकृष्ण चन्द्र को लेकर आधी रात को नन्द बाबा के यहाँ पहुंचाने गये थे और यमुना जी श्रीकृष्ण जी के चरण छूकर तुरन्त उतर गयी। इसका चमत्कार देखने ही योग्य है। मूल्य छोटे प्याले का ६) और बड़े का १।)

बिजली का लैम्प

यह बिजली के जेबी लैम्प बड़े काम के हैं। जेब में रखिये जब रोशनी की जरूरत हुई। बटन दाबते ही खासा चमकदार रोशनी हो जाती है। मूल्य ॥) से ५) तक।

बिजली के रेशमी फूल

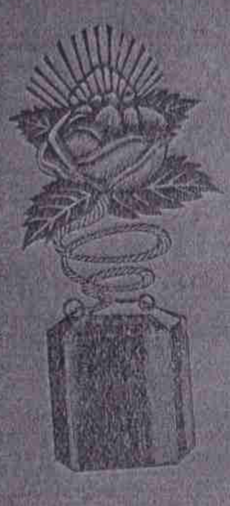

यह फूल बड़े खूब सूरत बने हुए हैं। यह कमीज कोट या साड़ी में लगाये जाते हैं जेब में इसकी बैटरी रक्खी रहती है। जब तबियत हुई बटन दबा दिया। इसकी चमक दमक से लगाने वाले की खूब सुरती दूनी बढ़ जाती है। बदन पर चाँदनी सी खिल जाती है। मूल्य बैटरी सहित २) से ४) तक।

सैलानी साहेब

इस गाड़ी एक पर साहेब बैठे हैं पीछे नौकर के हाथ में छाता है छाते पर दुनिया का नकशा है और देशों के नाम है। जब चाभी देने से गाड़ी चलती है तो छाता घूमता है साहेब टोपी उतार कर सब को सलाम करते हैं मानों आप दुनिया की सैर को जारहे हैं। कीमत १।) सवा रु०

माल मंगाने का पता—

मैनेजर, विनोद कम्पनी,

५०४ ए, कर्नैलगंज, इलाहाबाद।

श्रीमती गोपालदेवी
के नवजीवन औषधालय
इलाहबाद की कुछ
चुनी हुई औषधियां

रमाकुमार

[यह दवा दश वर्ष तक के बच्चे के लिए है]

यह सभी जानते हैं कि छोटे बालकों को रोग बहुधा पेट की खराबी से पैदा होते हैं। जहाँ ज़रा खाने पीने में गड़बड़ हुई कि बालक की पाचन क्रिया में खराबी पैदा हो जाती है और उसका परिणाम कोई न कोई रोग होता है। बच्चों की पेट की बीमारियों में—

'रमाकुमार'

रामबाण का काम करता है। दस्तों की हर तरह की खराबी के लिए यह अव्यर्थ औषध है।

कच्चे, पतले अनेक बार दस्त होना, हरे, नीले, सफेद मट-मैले, रंग-विरंगे दस्त होना, बच्चों की संग्रहणी, दांतों के निकलने में पेट की खराबी इत्यादि सब तरह के पेट के विकारों में—

'रमाकुमार'

अपना अपूर्वगुण दिखलाता है। बरसों से जिस बालक को दस्तों की बीमारी हो और यदि आप बहुत रुपया खर्च कर और सब तरह की दवाई करके थक गये हों और निराश हो गये हों तो हमारे कहने से आप बिना कुछ सोच विचार किये बच्चे को 'रमाकुमार' अवश्य ही खिलाइये। आप इसके चमत्कार से मुग्ध हो जायँगे। आप देखेंगे कुछदिनों के ही खिलाने से वह बालक निरोग और हृष्ट पुष्ट होने लगा।

'रमाकुमार'

दस्तों में ही नहीं, वरन् कब्जमें भी बच्चों को बड़ा लाभ करता है। कारण यह है कि इसका असर जिगर पर पड़ता है अर्थात् बिगड़े हुए जिगर को यह सुधारता है। जब जिगर अपना काम ठीक करने लगता है (पाचन क्रिया सुधर जाती है) तब न दस्त की गड़बड़ी रहती है और न कब्ज की शिकायत। पेट के बढ़े हुए जिगर को भी यह दवा ठीक कर देती है। पेट के विकार से जो ज्वर और खाँसी हो जाया करती है वह भी—

'रमाकुमार'

से दूर होती हैं। बालक का खाया पिया ठीक पचने से सब उपद्रव दूर हो जाते हैं और बालक हृष्ट पुष्ट हो जाता है।

☞ हर एक बाल बच्चे वाले गृहस्थ को यह महौषध अपने घर में अवश्य रखनी चाहिये। मू० १॥)

— —

सरसरस

सब उमर केबालकोंके लिए यह अमृत का काम देता है। यह दवा ऐसी स्वादिष्ट है कि कैसा भी चिड़चिड़ा बालक क्यों न हो, एक बार इसका चख ले तो फिर माँग माँग कर पीता है। इसीसे इसका नाम 'सरसरस' रक्खा है।

सरसरस

पिलाते रहने से सर्दी, खाँसी, नाकका बहना, बदहाजमा, कच्चे दस्तों का होना इत्यादि अनेक रोगोंसे, जो जरा सी गर्मी सर्दी लगने या कुपथ्य भोजन आदिके खानेसे होजाया करते हैं बालकोंको डर नहीं रहता। यह बालकोंका खाया पिया हजम करता है, खून बढ़ाता है और दुबले पतले बालकोंको बहुत जल्दी मोटा ताजा बना देता है। इसके सेवनसे बालक हृष्ट पुष्ट और तन्दुरुस्त रहता है। सच पूछिये तो यह दवा क्या है बालकों की तन्दुरुस्ती का बीमा है। दस पन्द्रह दिन के पिलाने से ही बालक की तन्दुरुस्ती में बहुत कुछ तरक्की दिखाई देने लगती है।

कीमत एक शीशीकी १) एक रुपया है।

नोट—अगर कोई बालक दस्तों के विकार से बहुत कम-

जोर हो गया हो तो पहले 'रमाकुमार' कुछ दिन खिला कर उसका पेट ठीक करिये फिर कुछ दिनों 'सरसरस' पिला कर उसको हृष्ट पुष्ट बनाइये।

संजीवनो

एक ही दवा अनेक रोगों को कैसे दूर कर सकती है, यदि यह बात आप की समझ में न आती हो तो "संजीवनी" की एक शीशी आप अवश्य मँगाइये।

"संजीवनी"—पेट के सब तरह के विकारों को दूर करती है। अतिसार संग्रहणी विशूचिका (हैजा) और शूल को इसकी पहिली ही खुराक फायदा पहुंचाती है। खाँसी और दमा वाले को खाते ही गुण दिखलाती है। बालकों के हरे पीले दस्त दूध गिरना पसली चलना आदि रोगों को तुरन्त आराम करती है। शिर का दर्द, कान दर्द, गाँठ का और बिच्छू, भिड़ आदि जहरीले जानवरों के काटने के दर्द को लगाते ही रामबाण की तरह असर करती है। इसे हर एक आदमी को अपने पास रखना चाहिये। लड़के वाले वाले घरों में तो इसका रखना परम आवश्यक है। सच पूछो तो यह एक डाक्टर का काम देती है।

एक शीशी का मूल्य १॥)

लवणबल

उदर विकार की रामबाण औषध

❀मनमाना भोजन करिये बदहाजमेका डर नहीं❀

यह लवणबल नामक सर्वोत्तम पाचक आयुर्वेद के

अनेक ग्रन्थोंको मथन करके तत्काल फल देनेवाली औष-धियोंके संयोग से तैयार किया है। इसके पेटमें पहुंचते ही पाचन प्रणाली के सम्पूर्ण रस उत्तेजित होकर पाचन क्रिया को सुचारू रूप से सम्पन्न करने में ऐसे लग जाते हैं जैसे किसी सुयोग्य मास्टर के आते ही दरजे के आलसी लड़के भी चौकन्ने होकर अपने अपने काम में लग जाते हैं। 'लवणबल' पेट में पहुँचते ही गरिष्ट भोजन को पचाकर रुधिर और वीर्यको अधिक परिमाण में बनाता है जिससे शरीर हृष्ट पुष्ट और हलका रहता है. चित्त प्रसन्न रहता है, काम करने में अधिक मन लगता है और अधिक देरतक काम करते रहने से भी थकावट नहीं मालूम होती। 'लवणबल' खाने मे ऐसा स्वादिष्ट है कि अमीर गरीब बालक वृद्ध स्त्री बच्चे सभी इसको बड़े प्रेम से खाते हैं। एक बार इसको चखने से बार बार खाने की इच्छा होती है। 'लवणबल' बदहज़मी, पेटका अफरना, खट्टी या धुएँ सी डकारों का आना, पेट का दर्द, पेट में कब्ज होना आदि अजीर्ण से उत्पन्न होने वाली सब बीमारियों में तुरन्त का काम करता है। एक शीशी मूल्य ||) आठ आना।

मिलने का पता--

राजवैद्या

श्रीमती गोपालदेवी,

नवजीवन औषधालय,

कर्नलगंज इलाहाबाद।

कलकत्ते के नामी डाक्टर एस० के० बर्म्मन का

बच्चों के लिये—

"लाल शरबत"

माँ !

देना मीठा मीठा "लाल शरबत"

बच्चों को
...ल बढ़ाने में
...ख्यात है।

—:o:—

...टे बच्चों
... बली ब-
...ना हो तो
...क बार इसे
...ला कर
...जमाइश
...जिए।

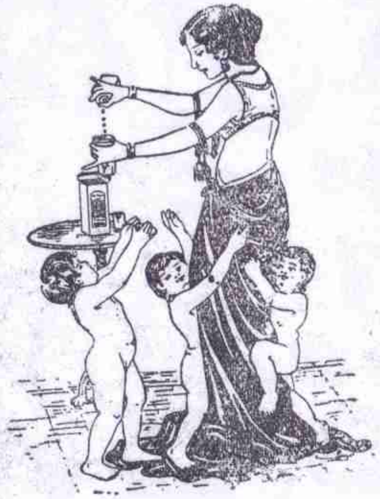

मीठा होने के कारण लड़के इसे बड़े चाव से पीते हैं।

—:o:—

बच्चों का बल बढ़ाने में इसके समान दूसरी पुष्टई नहीं है। यह अमृत के समान शीघ्र गुण करने वाला मोदक है।

मूल्य फी शीशी १) एक रु०। डा० म० ।=) छ आने।

डाक्टर एस० के० बर्म्मन,

पोष्टबक्स नं० ५५४, कलकत्ता।

एजेण्ट—इलाहाबाद (चौक) में हमारी दवाइयाँ दुबे ब्रादर्स के पास मिलती हैं।

हुआ सबेरा कौआ बोला

हुआ सबेरा कौआ बोला।
गंगा चला नहाने भोला॥
बाँय! बाँय! करती है गैया।
जल्दी दूध दुहाले मैया॥
मट्ठा खड़ी बिलोती नानी।
लिए हाथ में बड़ी मथानी॥
लेकर अलमारी की चाभी।
बना रही है हलुआ भाभी॥
राम राम रटता है तोता।
एक टाँग पर जो था सोता॥
कोठे पर आ बैठा बन्दर।
देखो, कहीं न आवे अन्दर॥
आया लखो जलेबी वाला।
कहता, "कितनी तोलूँ लाला?"
धूप सुनहली छत पर छायी।
पढ़ने की बेला हो आयी॥

—लाल कवि

नया खेल

नया तुमने कभी चिड़ियों और जानवरों के चित्र सीधी लकीरों से बनाए हैं। इन चित्रों को देखो। ये सब सीधी लकीरों के बने हैं। ऐसे ही चित्र तुम भी बनाओ।

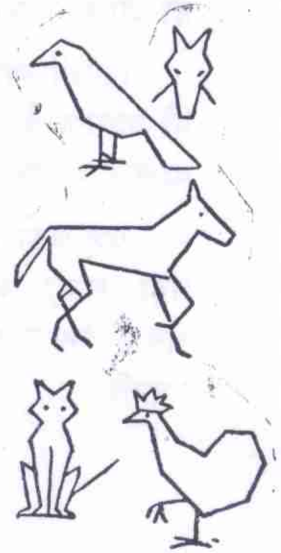

एक एक पेंसिल और एक एक कागज़ का टुकड़ा लेकर खेलने वाले बालकों को मेज़ के चारों तरफ़ बैठ जाना चाहिए।

इस खेल में हर एक बालक अपने कागज़ के टुकड़े पर एक सीधी लकीर खींच कर अपनी बाँयी ओर बैठे हुए दूसरे बालक को दे देता है। दूसरा बालक उसी रेखा में एक और सीधी रेखा खींच कर तीसरे को दे देता है और तीसरा उसी में एक

बिल्ली ने अपने को बढ़ा-चढ़ा कर दिखलाने की कोशिश नहीं की। उसने सीधे-सच्चे ढँग से कहा, "मुसीबत में अपने को बचाने का मुझे केवल एक ही उपाय आता है।"

"वह क्या है ?" लोमड़ी ने पूछा,

"पेड़ पर चढ़ कर मैं बहुत सी मुसीबतों से बच जाती हूँ," बिल्ली ने उत्तर दिया।

"कितनी कायर है तू ! कुत्तों और उनके मालिक मनुष्य को थकाने और छकाने के मुझे हजारों उपाय मालूम हैं।" लोमड़ी ने गर्व से कहा।

शिकारी कुत्ते पास आ चुके थे। बिल्ली झपट कर पेड़ पर चढ़ गई और लोमड़ी से धीरे से बोली, "अब जरा अपने करतब दिखलाओ ! थका दो इन कुत्तों को।"

परन्तु शेखी मारनेवाली लोमड़ी को कुछ न सूझा। वह न तो उत्तर ही दे सकी और न बचने का कोई उपाय ही सोच सकी। वहीं सिटपिटा कर रह गई। तब तक उसकी गरदन एक कुत्ते के जबड़े में फँस चुकी थी।

हजारों उपाय न जान कर काम का एक उपाय ही जानती होती तो इसकी जान क्यों जाती ?—बिल्ली ने सोचा।

—रामस्वरूप दूबे, ए० ए०, एल०एल० बी०

चिबिल्ली बिल्ली

मेरे घर जो आती बिल्ली,
है वह बच्चो, बड़ी चिबिल्ली।
जाने निकल कहाँ से आती ?
चप-चप दूध धरा पी जाती।

दौड़-दौड़ हम सब थक जाते,
कोई उसको पकड़ न पाते।
दूध दही सब जूठा करती,
नहीं किसी से है वह डरती॥

चुपके-चुपके आती जाती,
पकड़-पकड़ चूहों को खाती।
ऊधम बहुत मचाती है वह,
सब को नाच नचाती है वह॥

जायेगी यदि पकड़ चिबिल्ली,
अम्मा भिजवा देंगी दिल्ली,
वहाँ चाँदनी चौक सड़क में,
खेलेगी यह डराडा - गिल्ली॥

—श्रीनाथसिंह